समाज और संत के बीच लोक कल्याण हेतु सेतु बननेवाला महापुण्य का भागी होता है ।

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

मूल्य : ₹ ३.५०

लोक कल्याण सेतु

• प्रकाशन दिनांक : १५ जुलाई २०१४ • वर्ष : १८ • अंक : १ (निरंतर अंक : २०५)

मासिक समाचार पत्र

दुःखों की कमी नहीं, फिर भी पूर्ण निर्दुःख...

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी
१७ अगस्त

पूज्य संत
श्री आशारामजी बापू

...ऐसे हैं हमारे भगवान व भगवद्-तत्त्व में जगे महापुरुष !

पूज्य बापूजी की रिहाई के लिए निरंतर चल रहे हवन-यज्ञ

विद्यार्थी उज्ज्वल भविष्य निर्माण शिविर

भावनगर (गुज.) व अनगुल (ओड़िशा) में नोटबुक-वितरण तथा सिवान (बिहार) में सत्साहित्य-वितरण बैंगलोर व लुधियाना में 'ज्योत-से-ज्योत जगाओ' अभियान

सतत चल रही शरबत-वितरण सेवा के कुछ दृश्य

मालेगाँव, जि. नासिक (महा.) में 'महिला उत्थान मंडल' द्वारा महिला सर्वांगीण विकास शिविर आमेट (राज.) में भंडारा व अनाज-वितरण भिलाई, जि. दुर्ग (छ.ग.) के विद्यार्थियों के लिए विडियो सत्संग

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org देखें।

लोक कल्याण सेतु मासिक समाचार पत्र

(हिन्दी, गुजराती, मराठी व ओड़िया भाषाओं में प्रकाशित)

वर्ष : १८ अंक : १
भाषा : हिन्दी (निरंतर अंक : २०५)
प्रकाशन दिनांक : १५ जुलाई २०१४ मूल्य : ₹ ३.५०

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक : राजेश बी. कारवानी
प्रकाशन-स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण-स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.) - १७३०२५.
सम्पादक : सिद्धनाथ अग्रवाल

सदस्यता शुल्क :
भारत में : (१) वार्षिक : ₹ ३० (२) द्विवार्षिक : ₹ ५० (३) पंचवार्षिक : ₹ ११० (४) आजीवन : ₹ ३००
विदेशों में : (१) पंचवार्षिक : US $ 50 (२) आजीवन : US $ 125

सम्पर्क पता : 'लोक कल्याण सेतु' कार्यालय, संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-५ (गुज.)
फोन : (०७९) ३९८७७७३९/८८, २७५०५०१०/११.

★ e-mail : lokkalyansetu@ashram.org ✲ ashramindia@ashram.org
★ web-site : www.lokkalyansetu.org ✲ www.ashram.org

Opinions expressed in this news paper are not necessarily of the editorial board. Subject to Ahmedabad Jurisdiction.

'लोक कल्याण सेतु' के सदस्यों से निवेदन है कि कार्यालय के साथ पत्र व्यवहार करते समय अपना रसीद क्रमांक और सदस्यता क्रमांक अवश्य लिखें।

टीवी चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग

A2Z NEWS	सुदर्शन NEWS	श्रद्धा	मंगलमय
रोज सुबह ७-३० व रात्रि १० बजे	रोज सुबह ६-३० बजे	रोज रात १०-३० बजे	www.ashram.org पर उपलब्ध

इस अंक में...

- प्रेम का दरिया : श्रीकृष्णावतार ३
- जब गुरुजी मिल गये तो शेष बचा क्या ? ५
- शनिग्रह की पीड़ा को दूर करने का सुंदर उपाय ५
- संकीर्तन क्रांति ६
- सच्चे प्रेम का अनुपम स्वरूप : गुरु-शिष्य संबंध ९
- रक्षाबंधन पर्व के रहस्य १०
- बाँधें अपने प्यारे गुरुजी को राखी १०
- नन्ही बच्ची ने दिखायी राह - हरीश इसरानी ११
- बच्चा-बच्चा जानता है बापूजी की निर्दोषता - सुभद्रा अत्रे ११
- झूठे केसों से अदालतें भी चिंतित १२
- 'जी टीवी' के खिलाफ शिकायत दर्ज १२
- बालक की उदारता व विवेकशीलता १३
- हम बापू के बच्चे... (काव्य) १३
- जानिये कुछ खास खबरें १४
- अमेरिका में घटी अद्भुत घटना १४
- शांति का एकमात्र सुगम पथ - संत पथिकजी १५
- शास्त्रों के आधार होते हैं सद्गुरु १६
- स्वास्थ्यसंबंधी सरल प्रयोग १७
- नियम का महत्त्व १८
- सजातीय विचारवालों में मेल-मिलाप से होती है विजय १९
- सर्व फलदायक जन्माष्टमी व्रत-उपवास १९

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी : १७ अगस्त

प्रेम का दरिया : श्रीकृष्णावतार

-पूज्य बापूजी

प्रेमावतार श्रीकृष्ण का अवतार बाल-गोपालों से लेकर बड़े-बड़े विद्वानों तक को आनंद देनेवाला अवतार है। वसुदेव भगवान को अपने मन में लाते हैं, देवकी अपने गर्भ में लाती हैं, यशोदा ने हाथों में लिया है किंतु नंद ने तो उन्हें अपने हृदय में धारण किया है। (गुजराती भाषा में गाया जाता है :) नंद घेर आनंद भयो...

पहले आप भगवान को सत्संग के द्वारा मन में लाइये। फिर ध्यान के द्वारा हृदय में लाइये। फिर प्रेम के द्वारा हाथों में लाइये और 'स्व' में स्थिति करके भगवान को आलिंगन करिये। भगवान प्रेम के भूखे हैं, तभी तो प्रेम के वशीभूत होकर गोपियों की छछियाभरी छाछ पर बिक गये ! अगर श्रीकृष्ण-अवतार नहीं होता तो मानव प्रेमरस का प्रसाद कैसे पाता ? मानव को आनंद, माधुर्य और गीता का दिव्य

ज्ञान न मिलता तो मनुष्य-जाति संघर्ष, शोक और तबाही के कगार पर जा पहुँचती।

जहाँ-जहाँ यह श्रीकृष्ण-रस नहीं है, प्रेमाभक्ति का रस नहीं है वहाँ-वहाँ के मानव भारतवासियों की अपेक्षा ज्यादा खिन्न हैं, ज्यादा अशांत हैं, ज्यादा बीमार हैं। मरकर ज्यादा संख्या में प्रेतयोनि में वहीं के लोग जाते हैं जहाँ भगवन्नाम और उसकी दीक्षा नहीं है । श्रीकृष्ण का अवतार-उत्सव मनाने से अभिप्राय है श्रीकृष्ण का आदर्श, श्रीकृष्ण का संकेत जीवन में लाना। हमने 'कृष्ण-कन्हैया लाल की जय !' कह दिया, मक्खन-मिश्री बाँट दी - खा ली, इतने से ही अवतार-उत्सव मनाने की पूर्णाहुति नहीं होती । श्रीकृष्ण जैसी मधुरता को और चित्त की समता को जीवन में तमाम परेशानियों के बीच रहकर भी बनाये रखने का हमारा प्रयत्न होना चाहिए। यह जन्माष्टमी अपने प्रेम को प्रकट करने का संदेश देती है। जीव को संसार का आकर्षण खींच लेता है, उसे उस आकर्षण से हटाकर अपनी ओर आकर्षित करने के लिए जो तत्त्व साकार रूप में प्रकट हुआ, उस तत्त्व का नाम है 'श्रीकृष्ण' ।

श्रीकृष्ण का अवतार अलौकिक, श्रीकृष्ण की संदेश देने की तरकीब अलौकिक, श्रीकृष्ण का नाचना, बोलना, देखना सब अलौकिक और श्रीकृष्ण का अवतार लेने का समय भी अलौकिक ! माँ-बाप को हथकड़ियाँ पड़ी हैं, वे जेल में हैं, ऐसे में मध्यरात्रि को श्रीकृष्ण का जन्म हो रहा है। चारों तरफ दुःख के बादल मँडरा रहे हैं, परेशानियाँ-ही-परेशानियाँ हैं । उन परेशानियों के बीच मुस्कराते हुए अवतरित होकर श्रीकृष्ण दुनिया को दिखा रहे हैं कि चारों तरफ परेशानियाँ होते हुए भी तुम ऐसे ज्ञानस्वरूप चैतन्य आत्मा हो जिस पर परेशानियों का असर नहीं हो सकता । श्रीकृष्ण मथुरा में जहाँ-जहाँ भी गये, सबको प्रेम की निगाहों से अपना कर लिया। प्राणिमात्र का यह स्वभाव है कि वह प्रेम चाहता है और श्रीकृष्ण के रोएँ-रोएँ से वह प्रेम, वह आनंद टपकता है।

वह अठखेलियाँ करता हुआ ब्रह्म साकार रूप में प्रकट होकर भक्तों को संदेश देता है कि 'संसार की परिस्थितियों में और संसारी सुख में अपने को उलझाकर दुःखी मत हों। तत्त्वमसि - जो मैं हूँ वही तुम हो। आप उसी अंतरात्मा विषयक ज्ञान को सुनो, उसीको जानो, उसीमें आराम पाओ।' श्रीकृष्ण की बाँसुरी आज भी हमें संदेश देती है कि तुम अमृतस्वरूप हो, आनंदस्वरूप हो, प्रेमस्वरूप हो, सुख के दरिया हो। यही भगवान श्रीकृष्ण का, संतों का शुभ संदेश, शुभ संकल्प है। उनकी कृपा को भीतर भरते जाओ... ॐ...ॐ...ॐ...

श्रीकृष्ण का जीवन एक समग्र जीवन है। उसमें से आप जो कुछ भी पाना चाहें, पा सकते हैं। उनके जीवन की प्रत्येक घटना, प्रत्येक लीला आपको कुछ-न-कुछ संदेश अवश्य देती है। आप उन्हें अपनाकर उनका अनुसरण करके अवश्य ही वहाँ तक पहुँच सकते हैं जहाँ श्रीकृष्ण स्वयं हैं । आप श्रीकृष्ण के जीवन को आदर्श बनाकर उसके अनुसार आचरण करके उस पथ के पथिक

जब गुरुजी मिल गये तो शेष बचा क्या ?

श्री रामकृष्ण परमहंसजी एक बार अपने एक शिष्य के साथ ज्ञानवार्ता कर रहे थे। श्री रामकृष्ण ने कहा : ''अच्छा ! राम आदि इसे (अपनी ओर इशारा करते हुए) अवतार कहते हैं, तू क्या समझता है बता तो ?''

शिष्य : ''वे लोग बहुत छोटी बात कहते हैं।''

''अरे... ऐसा क्यों ? लोग भगवान का अवतार कहते हैं और तू कहता है वे छोटी बात कहते हैं !''

''हाँ प्रभु ! अवतार तो ईश्वर का अंश होता है और सद्गुरु तो साक्षात् ईश्वर होते हैं, अतः मुझे तो आप साक्षात् शिव (परब्रह्म) लगते हैं।''

''यह तू क्या कहता है ?''

''गुरुवर ! मुझे तो ऐसा ही मालूम होता है। आपने मुझे शिव का ध्यान करने को कहा है किंतु रोज यत्न करने पर भी मैं वैसा किसी तरह से नहीं कर पाता। ध्यान करने बैठते ही आपका प्रसन्न, उज्ज्वल मुखमंडल मेरे सामने आ जाता है। उसे हटाकर शिव को किसी तरह मन में नहीं ला पाता, इच्छा भी नहीं होती। अतः आप ही को मैं शिव मानकर ध्यान करता हूँ।''

उस शिष्य ने अपने गुरुदेव को सर्वश्रेष्ठ आध्यात्मिक आदर्श के रूप में स्वीकार कर लिया था। शिष्य की ऐसी निष्ठा देखकर श्री रामकृष्ण भीतर-ही-भीतर प्रसन्न हुए और उसकी आध्यात्मिक उन्नति के प्रति निश्चिंत हो गये।

पूज्य बापूजी अपने साधनाकाल की बात बताते हुए कहते हैं : ''मैं पहले भगवान शिव का, भगवान कृष्ण का, माँ काली का चित्र रखता था। इनका ध्यान करता था लेकिन जब सद्गुरु मिले तो ध्यानमूलं गुरोर्मूर्तिः... जब गुरुजी मिल गये तो सारे भगवान गुरुतत्त्व में ही समा गये। डीसा (गुज.) में हमारा साधना का कमरा कोई खोलकर देखे तो गुरुजी की मूर्ति ही होगी बस। मैं गुरुदेव के ही चित्र का ध्यान करते-करते, उनसे मानसिक सम्पर्क करते-करते उनकी स्थिति के, उनके निकट आ जाता। वे शरीर से चाहे कितने भी दूर होते लेकिन मैं भाव से, मन से उनके निकट जाता तो उनके गुण, उनके भाव और उनकी प्रेरणा ऐसी सुंदर व सुहावनी मिलती कि मैंने कभी सत्संग किया नहीं, मेरे बाप-दादा ने भी नहीं किया। गुरु ने संदेशा भेजा, 'सत्संग करो।' अब मैं सत्संग क्या करूँ ? किंतु गुरुजी ने कहा तो बस चली गाड़ी... चली गाड़ी तो तुम देख रहे हो, दुनिया देख रही है !

मन को एकाग्र करने के लिए गुरु का ध्यान लाभदायी है। गुरु की मूर्ति, श्रीचित्र कल्पित नहीं, प्रत्यक्ष हैं। गुरुजी का सत्संग, गुरुजी का चिंतन और मन-ही-मन उनके साथ वार्तालाप करने से उनका स्वभाव व गुण हममें आयेंगे।''

पूज्य बापूजी ने 'गुरुर्साक्षात् परब्रह्म' इस सूत्र की उपासना एवं पूर्ण अनुभूति की तो गुरुतत्त्व का, परब्रह्म-परमात्मा का अपने आत्मस्वरूप में साक्षात्कार कर लिया। और आज इसी सूत्र को हृदयंगम कर उनके करोड़ों शिष्य भी लाभान्वित हो रहे हैं।

शनिग्रह की पीड़ा को दूर करने का सुंदर उपाय

'शिव पुराण' में आता है कि 'गाधि, कौशिक तथा पिप्पलाद - इन तीनों मुनियों का स्मरण करने से शनिग्रहजनित पीड़ा का शमन हो जाता है।' (शिव पुराण, शतरुद्र संहिता : २५.२०)

गाधिश्च कौशिकश्चैव पिप्पलादो महामुनिः। शनैश्चरकृतां पीडां नाशयन्ति स्मृतास्त्रयः ॥

सरलता से स्मरण हेतु दोहा :

कौशिक, गाधि व पिप्पलाद मुनि का कीजे सुमिरन। शनिग्रह जनित सभी पीड़ाओं का निश्चित हो शमन ॥

कलियुग के दुष्प्रभाव से पार करनेवाली

संकीर्तन क्रांति

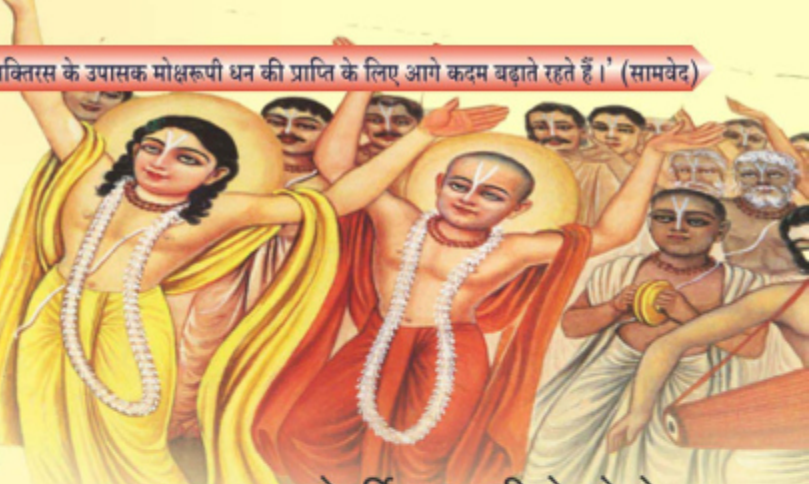

देवर्षि नारदजी ने कलियुग के जीवों के लक्षण बताते हुए कहा है कि कलियुग में जीव मंदमति, मंदभागी और उपद्रवी होते हैं।

मन्दाः सुमन्दमतयो मन्दभाग्या ह्युपद्रुताः ।

(श्रीमद् भागवत : १.१.३२)

खुद तो उपद्रवी होते हैं, दूसरों को भी साजिशें करके, झूठे आरोप लगा के, अफवाहें फैलाकर उपद्रवों की आग में झोंकनेवाले होते हैं । कलियुग में जीव अल्प सत्त्व, थोड़ी आयु, असत्यभाषी, सत्कर्म से रहित और अपने पेट पालने में ही लगे रहनेवाले होते हैं । ऐसे में कलियुग के जीवों का कल्याण कैसे होगा ?

सरल, अनुपम सहारा

'कलिसंतरण उपनिषद्' में इसका उपाय आता है कि कलियुग के दुष्प्रभाव से बचने के लिए देवर्षि नारदजी ने द्वापर युग के अंतकाल में भगवान ब्रह्माजी से पूछा था : ''हे भगवन् ! मैं पृथ्वीलोक में भ्रमण करते हुए किस प्रकार से कलिकाल से मुक्ति पाने में समर्थ हो सकता हूँ ?''

भगवान ब्रह्माजी ने आचमन लिया और कुछ समय ध्यानस्थ हो गये। फिर आँखें खोलकर बोले : ''हे वत्स ! तुमने आज मुझसे अत्यंत प्रिय बात पूछी है । आज मैं समस्त श्रुतियों का जो अत्यंत गुप्त रहस्य है, उसे बतलाता हूँ। इसके श्रवणमात्र से कलियुग में संसार-सागर को पार कर लोगे । बेटा ! कलियुग के सभी दोषों-दुःखों को मिटाने का एक ही तरीका है :

भगवत आदिपुरुषस्य नारायणस्य
नामोच्चारणमात्रेण निर्धूतकलिर्भवति ।

'भगवान आदिपुरुष श्रीनारायण के पवित्र नाम के उच्चारणमात्र से मनुष्य कलिकाल के समस्त दोषों को विनष्ट कर डालता है।''

यह सुनकर देवर्षि नारदजी के चेहरे पर विशेष प्रसन्नता की लहर दौड़ आयी । उन्होंने ब्रह्माजी का अभिवादन करते हुए कहा : ''इतना सुंदर, कल्याणकारी मार्ग आपने बताया । हे भगवन् ! इस भगवन्नाम-जप की क्या विधि है ?''

भगवान ब्रह्माजी ने कहा : **''नास्य विधिरिति ।** 'कोई विधि नहीं ।' शुद्ध हो या अशुद्ध, हर स्थिति में भगवन्नाम का सतत जप करनेवाला मनुष्य सालोक्य, सामीप्य, सारूप्य एवं सायुज्य आदि सभी तरह की मुक्ति को प्राप्त कर लेता है।''

कलियुग के उपरोक्त दोषों एवं भगवन्नाम के तारक दिव्य प्रभाव को जाननेवाले, मानसिक सुमिरन करके उसमें विश्रांति पानेवाले दूरद्रष्टा संतों-महापुरुषों ने इसीलिए दुःख, शोक, भय, चिंता एवं भवरोग से पार करनेवाले 'भगवन्नाम संकीर्तन' रूपी पावन सेतु का प्रचार किया होगा।

वेद, पुराण, महापुरुष गाते हैं हरिनाम कीर्तन की महिमा

चारों युगों में से कलियुग में भगवन्नाम की महिमा विशेष है। श्रीमद् भागवत (१२.३.५२) में आता है :

कृते यद् ध्यायतो विष्णुं त्रेतायां यजतो मखैः ।
द्वापरे परिचर्यायां कलौ तद्धरिकीर्तनात् ॥

'सतयुग में भगवान विष्णु के ध्यान से, त्रेता में यज्ञ से और द्वापर में भगवान की पूजा से जो फल मिलता था, वह सब कलियुग में भगवान के नाम-कीर्तनमात्र से प्राप्त हो जाता है।'

अतः भगवन्नाम संकीर्तन को कलियुग का 'कल्पतरु' भी कहा गया है।

संत तुलसीदासजी ने तो यहाँ तक कह दिया कि

भायँ कुभायँ अनख आलसहूँ।
नाम जपत मंगल दिसि दसहूँ॥

'अच्छे भाव से, कुभाव से, क्रोध से या आलस्य से, किसी भी तरह से भगवान का नाम लिया जाता है तो दसों दिशाओं में मंगल-ही-मंगल होता है।' (श्री रामचरित. बा.कां. : २७.१)

भगवान श्रीकृष्ण भगवद्-कीर्तन करते-करते भगवत्प्रेम में खो जानेवाले अपने प्रिय भक्तों के लक्षण बताते हुए कहते हैं :

'जिसकी वाणी प्रेम से गद्गद हो रही है, चित्त पिघलकर एक ओर बहता रहता है, रोने का ताँता नहीं टूटता, परंतु जो कभी-कभी खिलखिलाकर हँसने भी लगता है, कहीं लाज छोड़कर उच्च स्वर से गाने लगता है तो कहीं नाचने लगता है, भैया उद्धव ! मेरा वह भक्त न केवल अपने को बल्कि सारे संसार को पवित्र कर देता है।' (श्रीमद् भागवत : ११.१४.२४)

पूज्य बापूजी भगवन्नाम-जप तथा संकीर्तन की महिमा का वर्णन करते हुए कहते हैं : ''जिस कार्य में भगवत्स्मृति, भगवत्प्रीति, भगवद्रस हो वही भजन है। रसनं लक्षणं भजनम्।

भगवन्नाम अनंत माधुर्य, ऐश्वर्य और सुख की खान है । इस घोर कलिकाल में तो भगवन्नाम-जप के अतिरिक्त संसार-सागर से पार होने का अन्य कोई उपाय ही नहीं है । जाने-अनजाने में या भ्रम से अथवा और किसी प्रकार से क्यों न हो, भगवान का नाम लेने से उसका फल अवश्य मिलेगा । संकीर्तन के बाद थोड़ी देर शांत हो जाने से बुद्धि परमात्मा में प्रतिष्ठित होती है तथा किये गये संकल्प की जड़ें मजबूत हो जाती हैं।''

संकीर्तन से हो रहा है विश्वमानव का कल्याण

भगवन्नाम-संकीर्तन द्वारा विभिन्न संतों ने समाज को पावन किया है, जैसे - चैतन्य महाप्रभु ने बंगाल आदि क्षेत्रों को, संत तुकारामजी, संत एकनाथजी जैसे संतों ने महाराष्ट्र को झुमाया। पूज्य बापूजी ने सत्संग-संकीर्तन-आत्मविश्रांति के माध्यम से सम्पूर्ण विश्व को झुमाया एवं भगवद्रस, भगवद्-आनंद का पान कराया है । यही नहीं, पूज्य बापूजी के भक्तों द्वारा पर्वों, पुण्यदायी तिथियों तथा पूज्य बापूजी के अवतरण व आत्मसाक्षात्कार दिवसों पर गाँव-गाँव, शहर-शहर में विशाल संकीर्तन यात्राएँ निकाली जाती हैं । ये भक्त संकीर्तन करते-कराते निकल पड़ते हैं और गली-गली, मुहल्ले-मुहल्ले घूमकर वैचारिक प्रदूषण की निवृत्ति, विश्वशांति, 'सबका मंगल, सबका भला' की भावना का विकास, व्यसनमुक्त समाज का निर्माण, सांस्कृतिक जागरण आदि उद्देश्यों को भी सम्पन्न करते हैं।

कीर्तन करनेवालों को तो लाभ होता ही है, साथ ही सामूहिक भगवन्नाम कीर्तन से उत्पन्न तरंगों के प्रभाव से जो भी लोग उन तरंगों के दायरे में आते हैं, उन सभीका मंगल होता है, सहज में पापों एवं दोषों का नाश होता है।

प्रभातफेरियों और कीर्तन यात्राओं में भगवन्नाम का उच्चारण करने से अनेक आधिभौतिक, आधिदैविक एवं आध्यात्मिक लाभ होते हैं :

* 'हरि ॐ' नाम के उच्चारण एवं कीर्तन से मूलाधार केन्द्र में स्पंदन होते हैं। फलस्वरूप भय, ईर्ष्या, अहंकार, स्पर्धा, वैर, क्रोध आदि दुर्गुण, विकार मिट जाते हैं।

* भगवद्-कीर्तन करने से वृत्ति भगवदाकार होकर एक ओरा बनने लगती है जो वायुमंडल में फैलकर लोकमांगल्य करती है।

* सामूहिक संकीर्तन से तुमुल ध्वनि पैदा होती है जो पापों का नाश करती है, वैचारिक प्रदूषण को दूर करती है।

* साथ ही शास्त्रीय संगीत की राग-रागिनियाँ मन को एकाग्र करने में सहायक हो जाती हैं।

* शब्द शक्ति अलौकिक होती है । सोये हुए व्यक्ति को नाम से पुकारने पर वह जाग उठता है । ऐसे ही भगवन्नाम-संकीर्तन से जन्म-जन्मांतर से अज्ञान-निद्रा में सोया जीवात्मा भी जाग सकता है।

संकीर्तन जहाँ होता है वहाँ भगवान स्वयं वास करते हैं :

नाहं वसामि वैकुण्ठे योगिनां हृदये न वै ।
मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद ॥

'हे नारद ! मैं कभी वैकुण्ठ में भी नहीं रहता, योगियों के हृदय का भी उल्लंघन कर जाता हूँ परंतु जहाँ मेरे प्रेमी भक्त मेरे गुणों का गान करते हैं, वहाँ मैं अवश्य रहता हूँ।'

(पद्म पुराण, उत्तरखंड : ९४.२३)

विश्वशांति के संकल्प से देशभर में निकल रही हैं प्रभातफेरियाँ

आज पूज्य बापूजी के करोड़ों साधक विश्व-मांगल्य का संकल्प लेकर देशभर में संकीर्तन यात्राएँ व प्रभातफेरियाँ निकाल रहे हैं। समाज में व्याप्त असत्य, निंदा, दुर्गुण-दोषों की काली घटाओं को सत्य के उज्ज्वल प्रकाश से मिटाने का प्रयास कर रहे हैं । भारतीय संस्कृति एवं उसके रक्षक संतों के विरुद्ध हो रहे षड्यंत्रों से लोगों को आगाह कर रहे हैं।

देशभर में बापूजी के विभिन्न आश्रमों व समितियों द्वारा पिछले ५० वर्षों से संकीर्तन यात्राएँ निकल रही हैं । धन्य है उन सभीकी गुरुभक्ति, गुरुनिष्ठा, गुरुसेवा की भावना को जो ऐसी समाज की, ईश्वर की सेवा करने-कराने में भागीदार होते हैं !

(साधकों द्वारा निकाली जा रही संकीर्तन यात्राओं एवं प्रभातफेरियों की विस्तृत जानकारी हेतु 'ऋषि प्रसाद' तथा 'लोक कल्याण सेतु' के पिछले महीनों के अंक देखें तथा स्वयं इन संकीर्तन यात्राओं में भाग लेने हेतु अपने नजदीकी आश्रम से सम्पर्क करें।)

पुण्यदायी तिथियाँ

७ अगस्त	पुत्रदा-पवित्रा एकादशी (मनोवांछित फल प्रदान करनेवाला व्रत)
१० अगस्त	श्रावणी पूर्णिमा, नारियली पूर्णिमा, रक्षाबंधन, संस्कृत दिवस
१६ अगस्त	विष्णुपदी संक्रांति (पुण्यकाल : सूर्योदय से दोपहर १२-४३ तक) जन्माष्टमी, श्रीकृष्ण जयंती उपवास (निशीथकाल : रात्रि १२-२० से १-०६ तक),
२१ अगस्त	अजा(aja) एकादशी (यह व्रत सब पापों का नाश करनेवाला है । इसका माहात्म्य पढ़ने और सुनने से अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है ।)
२५ अगस्त	सोमवती अमावस्या (सूर्योदय से रात्रि ७-४५ तक) (इस दिन तुलसी की १०८ परिक्रमा करने से दरिद्रता मिटती है ।)
२९ अगस्त	कलंक-गणेश चतुर्थी, चन्द्रदर्शन निषिद्ध (चन्द्रास्त : रात्रि ९-१७) ('ॐ गं गणपतये नमः ।' का जप करने और गुड़मिश्रित जल से गणेशजी को स्नान कराने एवं दूर्वा व सिंदूर की आहुति देने से विघ्नों का निवारण होता है तथा मेधाशक्ति बढ़ती है ।)
३० अगस्त	ऋषि पंचमी (स्त्रियों द्वारा अज्ञानवश मासिक स्राव के दिनों में संत-दर्शन करना, दीक्षा लेना या इसी प्रकार की और कोई गलती हो गयी हो तो उसके प्रायश्चित के लिए उन्हें 'ऋषि पंचमी' का व्रत करना चाहिए ।)
५ सितम्बर	पद्मा-परिवर्तिनी एकादशी (व्रत करने व इसका माहात्म्य पढ़ने-सुनने से मनुष्य सब पापों से मुक्त हो जाता है ।)

सच्चे प्रेम का अनुपम स्वरूप : गुरु-शिष्य संबंध

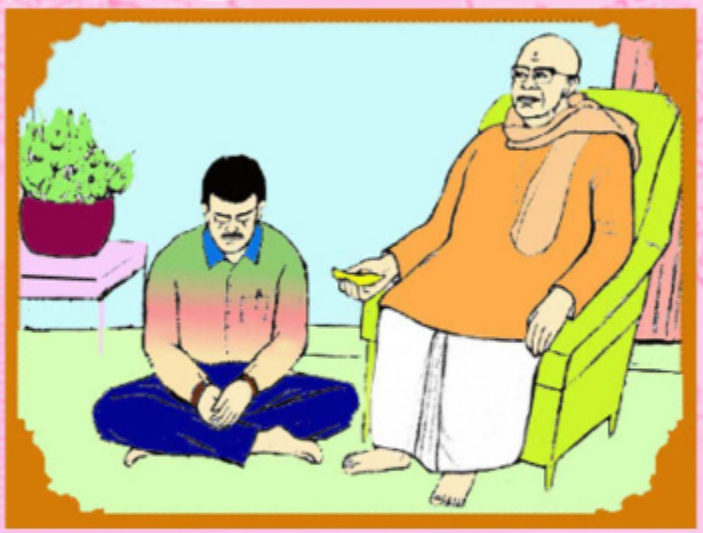

एक बार स्वामी अखंडानंदजी सरस्वती मुंबई पधारे। उनके एक भक्त ने उन्हें अपने घर भोजन के लिए आमंत्रण दिया, जिसके लिए महाराजजी ने स्वीकृति दे दी। संयोग ऐसा हुआ कि निश्चित दिन शिष्य आमंत्रण की बात भूल गया। उधर अखंडानंदजी उस दिन निश्चित समय से २ घंटे बाद तक शिष्य की प्रतीक्षा करते रहे लेकिन जब वह नहीं आया तो उन्होंने अपने प्रवास-स्थान पर ही फलाहार ले लिया।

शिष्य सदा की तरह अपने कार्यालय में काम कर रहा था। शाम को लगभग ४ बजे अचानक उसे महाराजजी को भोजन पर बुलाने की बात याद आयी तो वह सन्न रह गया कि 'हाय ! गुरुजी को भोजन के लिए आमंत्रित करके उसे भूल जाना कितना बड़ा अपराध है ! अब क्या किया जाय ? गुरुजी के सामने तो जाने की हिम्मत भी नहीं होगी। मुझे इस अपराध का दंड तो मिलना ही चाहिए। मैं ५ दिन तक उपवास रखूँगा।' अपनी भूल की बात उसने अपने एक गुरुभाई को बहुत दुःख के साथ बता दी और इसके प्रायश्चित की बात भी बता दी।

दो दिन उपवास में बीत गये। गुरुभाई से रहा नहीं गया और उसने अखंडानंदजी के पास जाकर सारी बात बता दी। शिष्य के ५ दिन के उपवास का समाचार गुरु के लिए बड़ा कष्टकर था। वे शाम को ही शिष्य के घर पहुँच गये। शिष्य ने ज्यों ही गुरुजी को देखा तो उनके चरण पकड़कर रोने लगा। तब श्री अखंडानंदजी ने उसे उठाकर पीठ सहलाते हुए कहा : ''बेटा ! इतना दुःखी मत हो। भूल सबसे होती है। हम कल तुम्हारे यहाँ भोजन करेंगे। अब तुम अपना उपवास समाप्त कर दो।''

शिष्य नीची गर्दन किये खड़ा रहा।

अखंडानंदजी ने उसे अपने पास बैठाया और केले खिलाकर उसका उपवास समाप्त कराया।

ऐसा संबंध होता है गुरु-शिष्य का ! एक की पीड़ा दूसरे की पीड़ा और एक की खुशी दूसरे की खुशी बन जाती है। दोनों एक-दूसरे से आत्मिक प्रेम के तंतु से सदैव जुड़े रहते हैं।

ऐसे ही निर्दोष आत्मिक प्रेम के तंतु से पूज्य बापूजी से जुड़े उनके करोड़ों शिष्य पूज्यश्री के साथ हो रहे अन्याय को देखकर बेहद आहत हैं। कइयों ने अन्न छोड़ा तो कइयों ने अपना घर, किसीने अपनी नौकरी तक छोड़ दी तो अनेकों ने सुख-सुविधाओं का परित्याग कर दिया। वहीं दूसरी ओर पूज्य बापूजी अपनी परवाह न करते हुए कारागृह में रहते हुए भी साधकों-भक्तों एवं देश-संस्कृति के हित का चिंतन करते रहते हैं। इसलिए पूज्य बापूजी ने सबको धैर्य बँधाते हुए कहा था : ''अन्न-जल आदि जो छोड़ के बैठे हैं उनको भोजन करा दो, उपवास न करें। सब बीत जायेगा, सत्य की जय होगी और सब आनंद में रहो, मेरी चिंता मत करो।''

कैसा है गुरु-शिष्य का नाता ! यह संबंध ईश्वर के वास्ते है, शाश्वत है और व्यक्तिगत स्वार्थ की सभी सीमाओं से परे है।

रक्षाबंधन पर्व के रहस्य

(रक्षाबंधन : १० अगस्त)

भारतीय संस्कृति में रक्षाबंधन का पर्व भाई-बहन के पवित्र स्नेह का प्रतीक माना जाता है, साथ ही इसमें आपसी सद्भाव, सौहार्द, एक-दूसरे की उन्नति का शुभ संकल्प व चारित्रिक उन्नति का रहस्य भी छुपा है। श्रावण पूर्णमासी या संक्रांति तिथि में राखी बाँधने से बुरे ग्रहों का प्रभाव नष्ट हो जाता है।

रक्षाबंधन का इतिहास

इस पर्व को कहीं-कहीं 'सलोनी' या 'सलूनो' भी कहते हैं, जिसका अर्थ होता है नया वर्ष। यह पर्व पूर्णिमा के दिन होता है, इसलिए यह आयु व आरोग्य देनेवाला है। जब श्रवण नक्षत्र का योग होता है, उसी दिन यह पर्व मनाया जाता है। श्रवण नक्षत्र के देवता भगवान विष्णु हैं। हमारी आध्यात्मिक सम्पदा एवं स्वास्थ्य के रक्षक-पोषक ऋषि-मुनि एवं सद्गुरु हैं। अतः इस दिन चन्द्रमा, भगवान विष्णु और ऋषि-मुनियों व सद्गुरु का सुमिरन करके दीर्घायु और उत्तम स्वास्थ्य की कामना की जाती है।

महर्षि दुर्वासा ने सावन की अधिष्ठात्री देवी की ग्रह-दृष्टि निवारण करने के लिए इस रक्षाबंधन पर्व की व्यवस्था की थी। भगवान श्रीकृष्ण की अनिष्ट नाग से रक्षा के लिए उन्हें रक्षासूत्र बाँधा गया था। शास्त्रों में कहा गया है कि विधिवत् राखी बाँधने से और बँधवाने से मनुष्य सब पापों से मुक्त हो जाता है।

भद्राकाल में रक्षासूत्र बँधवाने से होती है हानि

पूज्य बापूजी कहते हैं : ''जैसे शनि की क्रूर दृष्टि हानि करती है, ऐसे ही शनि की बहन भद्रा, उसका प्रभाव भी नुकसान करता है। अतः भद्राकाल में रक्षासूत्र नहीं बाँधना चाहिए। रावण ने भद्राकाल में सूर्पणखा से रक्षासूत्र बँधवा लिया, परिणाम यह हुआ कि उसी वर्ष में उसका कुलसहित नाश हुआ। इस काल में कोई बहन अपने भाई को राखी न बाँधे। भद्राकाल की कुदृष्टि से कुल में हानि होने की सम्भावना बढ़ती है।'' इस बार १० अगस्त को दोपहर १:३८ मिनट तक भद्राकाल है, इसके बाद ही राखी बाँधें।

बाँधें अपने प्यारे गुरुजी को राखी

बाल संस्कार केन्द्र के शिक्षक केन्द्र में रक्षाबंधन महोत्सव मनायें। विद्यार्थियों को कुछ दिन पूर्व वैदिक राखी बनाना सिखायें और रक्षाबंधन के दिन उन्हें घर से वैदिक राखी बनाकर लाने के लिए प्रेरित करें। (वैदिक राखी की विधि : ऋषि प्रसाद, जुलाई २०१४, पृष्ठ १३)

इस दिन विद्यार्थियों से गुरुदेव का मानसिक पूजन करवायें। बच्चों से हृदयपूर्वक प्रार्थना करवायें : 'हे कृपासिंधु पूज्य गुरुदेव ! हम यह रक्षासूत्र बाँधकर आपसे यही विनती करते हैं कि हमारी प्रीति, हमारी भक्ति, हमारी श्रद्धा आपके चरणों में नित्यप्रति बढ़ती रहे। कैसी भी विकट

परिस्थिति आये, हम आपके बताये पथ से कभी विचलित न हों। प्रभु ! हमारी श्रद्धा को आप सँभाले रखना। ॐ...ॐ...ॐ...

हे बापूजी ! शुभ संकल्प से परस्पर पोषित करनेवाले इस पर्व पर हम सभी संकल्प करते हैं कि आपकी आयु, आरोग्य, यश, कीर्ति, ओज-तेज खूब-खूब बढ़े। आपके पावन ज्ञान-प्रसाद से समस्त विश्ववासी लम्बे समय तक लाभान्वित होते रहें।'

फिर विद्यार्थियों से संकल्प करवायें कि 'हम अपना संयम व ओज-तेज बढ़ायेंगे व पूज्य बापूजी के दिव्य ज्ञान को आचरण में लायेंगे।'

विद्यार्थियों से इष्टदेव या गुरुदेव के श्रीविग्रह को राखी बँधवायें । केन्द्र शिक्षक विद्यार्थियों को प्रसादरूप में भेंट दे सकते हैं।

जन्माष्टमी महोत्सव कैसे मनायें ?

जन्माष्टमी पर्व पर बच्चों को भगवान श्रीकृष्ण की समता, साहस एवं गुरुभक्ति के प्रसंग एवं लीलाओं को सुनायें । इस दिन खेल तथा भजन गायन व नाटिका स्पर्धा करवा सकते हैं।

नाटिका स्पर्धा : विद्यार्थियों के ३-४ समूह बनायें । प्रत्येक समूह को अलग-अलग विषय दें । जैसे - श्रीकृष्ण का जीवन व लीलाएँ, बाल संस्कार केन्द्र की महिमा, सद्गुरु महिमा आदि । जिस समूह की नाटिका सबसे अच्छी होगी वह विजयी होगा।

नन्ही बच्ची ने दिखायी राह

मेरी छोटी बच्ची का नाम ईशा है। वह दूसरी कक्षा में पढ़ती है । उसने ३ साल पहले पूज्य बापूजी से दीक्षा ली थी। जब वह स्कूल जाती है तो रोज अपनी स्कूल यूनिफॉर्म (विद्यालय की पोशाक) पर **'आई सपोर्ट आशारामजी बापू'** (मैं बापूजी का समर्थन करती हूँ) का बैज लगाकर जाती है, जिसमें पूज्य बापूजी का श्रीचित्र भी छपा है । एक दिन उसकी शिक्षिका ने कहा : ''ईशा ! यह क्या लगा रखा है ? कल से यह लगाकर मत आना।''

ईशा : ''ये हमारे भगवानजी हैं और हम इनका सुप्रचार कर रहे हैं।'' शिक्षिका के मना करने के बाद भी ईशा निःसंकोच रोज बैज लगा के जाती है।

ईशा की गुरुदेव पूज्य बापूजी के प्रति दृढ़ निष्ठा, निडरता और आत्मविश्वास ने हम साधकों को भी सीख दी है, प्रेरित किया है।

- हरीश इसरानी (ईशा के पिता), इंदौर

बच्चा-बच्चा जानता है बापूजी की निर्दोषता

मेरे घर में लगभग ५-६ सालों से बाल संस्कार केन्द्र चलता है। मेरी छोटी बेटी श्रद्धा ७ वर्ष की है। वह केन्द्र में बताये गये नियमों को रोज करती है। बापूजी का सत्संग भी खूब ध्यान से सुनती है। उसके गले में बापूजी का लॉकेट हमेशा रहता है और उसकी हर कॉपी में बापूजी का श्रीचित्र होता है।

टीवी पर बापूजी के बारे में गलत खबरें देखकर विद्यालय में उसकी सहेलियाँ बोलने लगीं कि ''देखो, तुम्हारे बापूजी जेल में हैं।'' श्रद्धा ने तुरंत दबंगई से बोला : **''मेरे बापूजी जेल में नहीं हैं, हर जगह हैं। मेरे बापूजी सिर्फ एक शरीर नहीं हैं, वे सर्वव्यापक हैं।''**

यह भावना सिर्फ एक मेरी बेटी की नहीं है, ऐसे करोड़ों बच्चे हैं जिन्हें बाल्यकाल में ही बापूजी की कृपा से अच्छे संस्कार मिल रहे हैं। मनगढ़ंत कहानियाँ बनाकर गुमराह करनेवाले बापूजी के बारे में क्या बतायेंगे ! बापूजी के सत्संग में आनेवाला बच्चा-बच्चा जानता है कि बापूजी पूरी तरह निर्दोष हैं।

इस छोटी बच्ची में भी बापूजी के दर्शन की इतनी तड़प है कि वह सुबह जल्दी उठकर पूरे परिवारवालों के साथ 'ॐ ॐ ॐ बापूजी जल्दी बाहर आओ' का जप करती है। हमें विश्वास है कि बापूजी जल्द-से-जल्द बाहर आयेंगे और पूरी दुनिया को सच्चाई का पता चलेगा।

झूठे केसों से अदालतें भी चिंतित

(संदर्भ : दैनिक जागरण)

हाल ही में दिल्ली में घटित एक घटना दुष्कर्म के कानूनों पर पुनर्विचार करने के लिए मजबूर कर देती है। दिल्ली के इब्राहिम खान पर उसकी सगी बेटी ने दुष्कर्म कर गर्भवती बनाने का आरोप लगाया । इस आरोप के कारण इब्राहिम का सामाजिक बहिष्कार हुआ । वह जेल गया । ७ साल जेल में रहने के बाद साबित हुआ कि उसकी बेटी ने उस पर झूठा मुकदमा दर्ज कराया था क्योंकि वह उसके द्वारा किये जा रहे देह-व्यापार में बाधक था। बेटी को नाजायज बच्चा पैदा हुआ था। अदालत ने इब्राहिम को बेगुनाह साबित कर छोड़ तो दिया, मगर तब तक उसकी पूरी दुनिया तबाह हो चुकी थी।

इस तरह के मामलों में इब्राहिम अकेला नहीं बल्कि कितने ही ऐसे लोग हैं जो दुष्कर्म व छेड़छाड़ के झूठे मुकदमों का खामियाजा भुगत चुके हैं या भुगत रहे हैं।

पिछले एक साल में राजधानी में झूठे मुकदमों का प्रचलन (ट्रेंड) तेजी से बढ़ा है। इस संबंध में दिल्ली की कई जिला अदालतें व उच्च न्यायालय भी चिंता व्यक्त कर चुके हैं। वहाँ की जिला अदालतों में लम्बित दुष्कर्म व छेड़छाड़ के मामले देखें तो पता चलता है

कि पिछले कुछ समय में अपने लाभ के लिए अनेक महिलाओं द्वारा कानून का दुरुपयोग किया गया। दिल्ली उच्च न्यायालय में पिछले ६ माह के दौरान दुष्कर्म के १३ मामलों में दर्ज एफआईआर रद्द करने के लिए याचिका दायर की गयी। इनमें बताया गया कि शिकायतकर्ता ने आरोपी के द्वारा शादी से इनकार के बाद मुकदमा दर्ज कराया था और अब उनकी शादी हो चुकी है । इसलिए मुकदमा खारिज किया जाय ।

(इन घटनाओं को देखते हुए जल्द-से-जल्द दुष्कर्म कानूनों पर पुनर्विचार कर संशोधन करना बहुत आवश्यक हो गया है।)

'जी टीवी' के खिलाफ शिकायत दर्ज

हाल ही में 'जी टीवी' द्वारा पूज्य बापूजी पर अपमानजनक कार्यक्रम प्रसारित करने पर लुधियाना (पंजाब) के थाने में जी टीवी के विरुद्ध भारतीय दंड संहिता की धारा २९५ए, २९८ एवं १२०बी के अंतर्गत शिकायत दर्ज की गयी है। शिकायतकर्ताओं का कहना है कि 'आशारामजी बापू के ऊपर झूठा केस लगाया गया है। बापूजी के सत्संग व उनके बताये मार्ग पर चलकर करोड़ों लोगों का जीवन संयमी-सदाचारी तथा उज्ज्वल हुआ है। अतः बापूजी उनके लिए पूजनीय हैं और सदा रहेंगे । जी टीवी में जिस तरह बापूजी पर अपमानजनक कार्यक्रम प्रसारित किया गया है वह कदापि सहनीय नहीं है । इससे करोड़ों साधकों की धार्मिक भावनाएँ आहत हुई हैं । समाज को गुमराह करनेवाले ऐसे चैनलों के खिलाफ हम हर कानूनी रास्ता अपनायेंगे।'

इस अवसर पर साधकों के साथ बजरंग दल (पंजाब) के सहसंयोजक श्री चेतन मल्होत्रा सहित अन्य धार्मिक संगठनों के पदाधिकारी भी थे, जिन्होंने टीवी चैनल के खिलाफ सख्त कदम उठाने की माँग की है।

भारतीय संस्कृति और साधु-संतों के प्रति लोगों की आस्था खत्म करने के खेल में पैसे और टीआरपी के लिए कुछ भी करने को तैयार रहनेवाले मीडियावाले मुख्य भूमिका निभा रहे हैं। लेकिन जनता अब गुमराह होनेवाली नहीं है क्योंकि पेड मीडिया की पोल खुल चुकी है और अब उसके खिलाफ सख्त कानूनी कार्यवाही भी होगी।

बालक की उदारता व विवेकशीलता

स्वामी रामतीर्थ को बचपन में उनके गाँव के एक मौलवी साहब प्रारम्भिक शिक्षा दिया करते थे । उन्हें बच्चों से बहुत स्नेह था । वे मौलवी भारतीय संस्कृति की महानता, गाय की महत्ता, संत-महापुरुषों की महिमा को जानने और इनका आदर करनेवाले थे । उन्होंने इन बातों को बालक तीर्थराम को भी समझाया था।

प्रारम्भिक शिक्षा पूर्ण करके पाठशाला जाने से पहले जब तीर्थरामजी मौलवी साहब से विदाई लेने के लिए जाने लगे तो उनके पिताजी को हुआ कि मौलवीजी को मासिक वेतन के साथ कुछ भेंटरूप में देना चाहिए । परंतु वे निर्णय नहीं ले पा रहे थे कि क्या भेंट दें ?

बालक तीर्थराम पिताजी के भाव समझकर बोल पड़ा : ''पिताजी ! मेरी सबसे प्रिय वस्तु आप मौलवीजी को दे दीजिये।''

पिताजी ने आश्चर्य से पूछा : ''भला ! ऐसी तुम्हारी कौन-सी प्रिय वस्तु है ?''

''पिताजी ! मुझे गौमाता बड़ी प्यारी हैं। मैं चाहता हूँ कि मौलवीजी ने मुझे जो बड़े ही प्यार से विद्यारूपी दुग्धपान कराया है, उसके बदले में आप उन्हें अमृतरूपी दूध देनेवाली गौमाता देकर उनका सम्मान करें।''

बालक का संस्कृति व गौ-प्रेम देख के तथा विवेकयुक्त, उदारतापूर्ण सुझाव सुनकर बालक के पिताजी बहुत प्रसन्न हुए और उनके हृदय से बालक के लिए खूब सारे शुभाशीष बरस पड़े। जब मौलवीजी को यह भेंट दी गयी, तब वे भी गद्‌गद हो गये।

बाल्यकाल में बच्चों को जैसे संस्कार मिलते हैं, उनका जीवन वैसा ही ढल जाता है। बालक तीर्थराम को माता-पिता व गुरुजनों के द्वारा सनातन संस्कृति के ऐसे ही सुंदर संस्कार मिले थे, तभी तो आगे चलकर उन्होंने ईश्वरप्राप्ति की और स्वामी रामतीर्थ के रूप में विख्यात हो के भारत ही नहीं, विदेशों में भी भारतीय संस्कृति की महानता का डंका बजाया।

☺ हम बापू के बच्चे...

हम बापू के बच्चे सारे,
कितने प्रसन्न कितने प्यारे ।
प्रातः उठ हरि ध्यान करें,
ईश विनय यशगान करें ॥
रगड़-रगड़कर नित्य नहायें,
शुद्ध बुद्ध निर्मल हो जायें ।
पढ़ लिखकर गुणवान बनें,
साहसी वीर महान बनें ॥
सूरज तुलसी को नित जल चढ़ायें,
ओज तेज बुद्धि बल पायें ।
माता-पिता-गुरु चरणों में,
नित्य सदा शीश नवायें ॥
उत्साह उमंग से काम करें,
अभ्यास संग ध्यान करें ।
समता स्नेह हृदय में भरें,
सेवा सदा निष्काम करें ॥
दुर्गुण कुसंग से दूर रहें,
सद्‌गुण सत्संग भरपूर रहें ।
नहीं राग द्वेष अभिमान करें,
सर्व सदा सन्मान करें ॥

- जानकी ए. चंदनानी

जानिये कुछ खास खबरें

अश्लीलता देखने से छोटा हो जाता है दिमाग

जो लोग इंटरनेट या टीवी पर अश्लील सामग्री देखते हैं, उनके मस्तिष्क का ग्रे-मैटर कम हो जाता है, दिमाग सिकुड़ने लगता है और उसका विकास कम होता है। बर्लिन (जर्मनी) के मैक्स प्लैंक इंस्टीट्यूट के शोध से यह बात सामने आयी है। शोध में पाया गया कि कामुक विडियो देखने से दिमाग के एक हिस्से से इन्सान को प्रेरित करनेवाली प्रक्रिया खत्म हो जाती है।

भारतीय मूल के १० वर्षीय बच्चे का अमेरिका ने माना लोहा

लॉस एंजिलिस। भारतीय मूल के एक १० साल के प्रतिभावान बालक तनिष्क ने घर पर ही पढ़ाई करते हुए (पूरे अमेरिका में) सबसे कम उम्र में ग्रेजुएट हाईस्कूल पूरा किया है। राष्ट्रपति बराक ओबामा ने भी इस भारतीय प्रतिभा की खूब सराहना की है।

भारतीय मूल के वैज्ञानिक को मिला वर्ल्ड फूड अवार्ड

वॉशिंगटन। भारत में जन्मे वनस्पति वैज्ञानिक संजय राजाराम को हरित क्रांति के बाद वैश्विक गेहूँ उत्पादन में २० करोड़ टन से ज्यादा बढ़ोतरी में योगदान देने के लिए प्रतिष्ठित 'वर्ल्ड फूड अवार्ड' से सम्मानित करने की घोषणा की गयी है। साथ ही उन्हें पुरस्कार में २,५०,००० डॉलर भी मिलेंगे।

गाय के गोबर से निकलेगा शुद्ध पानी

वॉशिंगटन। गाय के गोबर से शुद्ध पानी एवं अतिरिक्त उत्पाद के रूप में ऊर्जा पैदा करने की तकनीक खोजी गयी है। भविष्य में होनेवाली पानी व ऊर्जा की कमी को दूर करने में यह कारगर साबित होगा।

अमेरिका में घटी अद्भुत घटना

हमारे यहाँ (सेन जोस, कैलिफोर्निया, यूएसए) हुए 'विद्यार्थी उज्ज्वल भविष्य निर्माण शिविर' में गैर-भारतीय मूल के भी बच्चे आये थे। शिविर के दौरान हमने पूज्य बापूजी के ध्यान-संकीर्तन व सत्संग की एक विडियो सीडी लगायी, जो कि हिन्दी में थी। कुछ मिनट बाद एक बहन ने आकर मुझे कहा : ''यह तो हिन्दी में है। इन गैर-भारतीय मूल के बच्चों को कुछ समझ में नहीं आयेगा और फिर आगे से आयेंगे भी नहीं।''

तो हमने बापूजी से प्रार्थना की कि 'हे गुरुदेव ! अब आपका चालू सत्संग बीच में बंद करना तो अनादर होगा। अब आप ही सँभालिये।'

सत्संग और कीर्तन चलता रहा। तब एक अद्भुत घटना घटी। कहते हैं कि ब्रह्मज्ञानी महापुरुष के सत्संग में यदि बहरा या अंधा भी आ जाय तो उसका भी कल्याण हो जाता है तो उनका सत्संग सुनने व दर्शन करने को मिल जायें तो फिर कहना ही क्या ! हुआ भी ऐसा ही। गैर-भारतीय बच्चे जब शिविर में आये थे तो बहुत चंचल थे परंतु सत्संग चालू करने के कुछ देर बाद उनकी चंचलता गायब हो गयी। दो बच्चे आराम से शांत बैठ गये और एक बच्चा तो कीर्तन में झूमने लगा ! इतना ही नहीं, बच्चों के अंदर हुए विलक्षण परिवर्तन से प्रसन्न हो के शिविर पूरा होने के बाद उनकी माँ ने पूछा कि 'अगला कार्यक्रम कब होगा ?'

कैसी है पूज्य बापूजी की असीम कृपा जो अपने आप ही सबका रक्षण-पोषण कर लेती है।

- राजेश नंदवानी, कैलिफोर्निया (यूएसए)

शांति का एकमात्र सुगम पथ

- संत पथिकजी महाराज

जो व्यक्ति संसार के दुःखों से घबराकर शक्ति और शांति की प्राप्ति के लिए संत-सद्गुरु का आश्रय लिये बिना प्रयत्न करते हैं, वे महान भूल करते हैं और इस भूल के परिणाम में कभी-न-कभी भयानक हानि उठाते हैं और अंत में संत-सद्गुरु की शरण में आकर ही शांति का सुगम पथ प्राप्त करते हैं। जिस मनुष्य के हृदय में संत-सद्गुरुदेव के प्रति श्रद्धा नहीं होती, वह निःसंदेह अभिमानी प्रकृति के दासत्व में बँधा हुआ मनुष्य है या तो उसे अपने ज्ञान की पूर्णता का झूठा गर्व है या उसे अपनी सीमित शक्ति पर भरोसा है। जब तक संत-सद्गुरु के आज्ञापालन में सुरुचि एवं श्रद्धा नहीं होती, तब तक मनुष्य स्वेच्छाचारितारूपी भयानक दोष से मुक्त नहीं हो सकता। इस दोष के रहते मनुष्य को किसी भी प्रकार के जप, तप, व्रतादि शुभकर्मों द्वारा वास्तविक शांति न प्राप्त होकर उलटा उसमें अभिमान की वृद्धि होती है। कदाचित् शुभकर्मों के द्वारा कुछ शक्ति प्राप्त हुई भी तो अपने स्वच्छंदतारूपी दोष के कारण मनुष्य उसका मनमाने ढंग से उपयोग करते हुए प्रायः भोगी ही बनता है, योगी नहीं।

ऐसे स्वेच्छाचारी मानव, जिनका पथ-प्रदर्शन सद्गुरुदेव के द्वारा नहीं होता, अपने तप-त्यागादि के द्वारा शक्ति प्राप्त कर मानव-समाज की ओर बढ़ते हैं और मानव-समाज की ओर से प्राप्त हुआ मान उनके मन को इस प्रकार मुग्ध कर लेता है कि वे अपने त्याग-पथ पर चलना ही भूल जाते हैं।

किसी भी त्यागी-तपस्वी के लिए मानव-समाज की ओर से प्राप्त होनेवाला मान वाहनरूपी हाथी की तरह है। जिस पर वह बड़े ही उत्साह और हर्षोल्लास के साथ बैठता है, पर उसे यह ज्ञान नहीं होता कि मानरूपी हाथी पर बैठते ही मदरूपी महावत उसे प्रपंचमय जगत की ओर किस प्रकार ले जाता है। क्योंकि मानरूपी हाथी पर बैठकर परमार्थ के अति उच्च पर्वतीय पथ पर कोई चढ़ ही नहीं सकता। परमार्थ-पथ के अति उच्च सोपानों में तो सरलतारूपी पगडंडी से होकर पैदल चलना पड़ता है। अतः बुद्धिमान मनुष्यो ! यदि आप वास्तव में परम शांति चाहते हैं, यदि आप लाखों वर्षों से पूरे न होनेवाले कार्य (ईश्वरप्राप्ति) को इस जीवन के कुछ वर्षों में, महीनों में पूरा करना चाहते हैं तो संत-सद्गुरु की शरण में रहकर उनकी आज्ञानुसार कर्तव्यों का पालन कीजिये। उनके शब्दों को सुनिये, ध्यान दीजिये, मनन कीजिये। यदि आप परमार्थ के पथ में कहीं रुकना नहीं चाहते हैं तो संसार के तुच्छ पदार्थों में सुख न मानिये क्योंकि वह सुख नहीं, सुखाभास है और उसकी लोलुपता से ही सभी प्रकार के दुःख और आत्मसुख में बाधा उत्पन्न होती रहती है।

शास्त्रों के आधार होते हैं सद्गुरु

(संत चरनदासजी जयंती : २८ अगस्त)

मानव-जीवन का परम लक्ष्य परमात्मप्राप्ति है और इसकी यात्रा केवल आत्मा-परमात्मा को पाये हुए संत-महापुरुष ही करवा सकते हैं। ऐसे सद्गुरुओं का वर्णन करते हुए संत चरनदासजी कहते हैं :

योगी योग युक्ति करि हारे, ध्यानी ध्यान लगावैं।
हरिजन गुरु की दया बिना, यों दृष्टि नहीं दरशावैं॥...
...देश अटपटा बेगम नगरी, निगुरे राह न पाया।
चरनदास शुकदेव गुरु ने, किरपा करि पहुँचाया॥

न योगी योग द्वारा, न ध्यानी ध्यान द्वारा और न पंडित विद्या और ग्रंथों-शास्त्रों के पठन-पाठन द्वारा उस अलख, अगम से लगन जोड़ सकते हैं। जपी, तपस्वी, संन्यासी, भेखी और ब्रह्मचारी भी केवल अपनी कोशिश से प्रभु के दुर्गम देश में नहीं पहुँच सकते। जिन वेद, पुराण आदि धर्मग्रंथों के आसरे जप-तप आदि साधन किये जाते हैं, वे ग्रंथ तो परमात्मा का पता न पाकर परमात्मा के विषय में 'यह नहीं, यह नहीं' (नेति, नेति) कहकर रह जाते हैं। उनके सहारे परमात्मा से भला कैसे मिलाप हो सकता है ? परमात्मा का स्वरूप अवर्णनीय है और उस तक पहुँचने की राह भी बड़ी दुर्गम है। अतः संत चरनदासजी स्पष्ट शब्दों में कहते हैं कि निगुरा परमात्मा के पास पहुँचने का मार्ग नहीं पा सकता। मेरे गुरु शुकदेवजी ने कृपा करके मुझे परमात्म-पद तक पहुँचाया।

प्रत्यक्ष गुरु को शास्त्र के सहारे की आवश्यकता नहीं होती पर शास्त्र को गुरु के सहारे की जरूरत होती है। **गुरु अपना आधार स्वयं हैं पर शास्त्र को अनुभवी महात्मा के आधार की जरूरत होती है।** जब तक परमात्मा सद्गुरु के रूप में प्रकट होकर सहायता नहीं देते, तब तक न तो वेदों-शास्त्रों में प्रकट किये गये ज्ञान की समझ आ सकती है और न ही जीवात्मा को परम सत्य का ज्ञान प्राप्त हो सकता है।

वैवाहिक विज्ञापन

वंशे सदैव भवतां हरिभक्तिरस्तु। 'आपके कुल में सदैव हरिभक्ति बनी रहे।'

नाई जाति, भिल्खीवाल गोत्र, रंग गोरा, ३१/५'-५'', शिक्षा - १०वीं, दीक्षा - २००२ मुंबई में, व्यवसाय - टेलरिंग, अहमदाबाद (गुज.) निवासी युवती हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वर चाहिए। (पूनम व्रतधारी को प्राथमिकता)
फोन : 9819517368 / 8734937841
(सम्पर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-4209)

तेली जाति, नागस्य गोत्र, रंग गोरा, ३१/५'-४'', शिक्षा - इलेक्ट्रीकल इंजीनियरिंग, दीक्षा - २००२ अहमदाबाद में, व्यवसाय - मैनेजर रिलायंस इंडस्ट्रीज में, अनगुल (ओड़िशा) निवासी युवक हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वधू चाहिए।
फोन : 8511624387
(सम्पर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-4219)

चमार जाति, गौतम गोत्र, रंग गोरा, २७/६'-१'', शिक्षा - बी.टेक., दीक्षा - २००७ इलाहाबाद में, व्यवसाय - सॉफ्टवेर इंजीनियर नोयडा में, लखनऊ (उ.प्र.) निवासी युवक हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वधू चाहिए।
फोन : 9987763224 / 7834977440
(सम्पर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-4222)

नाई जाति, भिल्खीवाल गोत्र, रंग साँवला, २७/५'-१'', शिक्षा - बी.कॉम., दीक्षा - २००२ उल्हासनगर में, व्यवसाय - B2B Portal (Data Security Executive) अहमदाबाद (गुज.) निवासी युवती हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वर चाहिए। फोन : 9819517368 / 8734937841
(सम्पर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-4208)

साहू जाति, कश्यप गोत्र, रंग गोरा, २२/५'-२'', शिक्षा - बी.ए., दीक्षा - २००६ मुंबई में, मुंबई (महा.) निवासी युवती हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वर चाहिए।
फोन : 9821470842 / 022-23749241
(सम्पर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-4223)

ब्राह्मण जाति, वात्सयान गोत्र, रंग गोरा, २७/५'-३'', शिक्षा - एम.ए. (इतिहास), पी.जी.डी.सी.ए., दीक्षा - २००५ अमृतसर में, व्यवसाय - प्राइवेट कम्पनी में सर्विस, जालंधर (पंजाब) निवासी युवती हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वर चाहिए।
फोन : 9041161621
(सम्पर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-4224)

ब्राह्मण जाति, भारद्वाज गोत्र, रंग गोरा, २४/५'-५'', शिक्षा - एम.एससी. (गोल्ड मेडलिस्ट), एम.बी.ए. (अध्ययनरत), दीक्षा - २००५ अहमदाबाद में, बिलासपुर (छ.ग.) निवासी युवती हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वर चाहिए।
फोन : 8141420967/ 9826849683
(सम्पर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-4225)

मैथिल ब्राह्मण जाति, शांडिल्य गोत्र, रंग गोरा, २१/५'-३'', शिक्षा - एम.एससी. (गणित) अध्ययनरत, दीक्षा - २०१० पटना में, बेगूसराय (बिहार) निवासी युवती हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वर चाहिए। फोन : 9241099519
(सम्पर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-4227)

ब्राह्मण जाति, पाराशर गोत्र, रंग गेहुँआ, २९/५'-८'', शिक्षा - फिजियोथेरेपिस्ट, दीक्षा - २००४ फरीदाबाद में, व्यवसाय - प्राइवेट नौकरी, गुड़गाँव (हरियाणा) निवासी युवती हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वर चाहिए। फोन : 9818163068
(सम्पर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-4229)

व्याहूत कलवार जाति, कश्यप गोत्र, रंग गोरा, २९/५'-६'', शिक्षा - एम.बी.ए. (ICFAI), दीक्षा - २००५ जमशेदपुर में, व्यवसाय - ICICI Prudential Life Insurance में B.R.M. के पद पर, गाजियाबाद (उ.प्र.) निवासी युवक हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वधू चाहिए। फोन : 9431277901
(सम्पर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-4227)

अग्रवाल बनिया जाति, गोयल गोत्र, रंग गोरा, २९/५'-९'', शिक्षा - बी.कॉम., दीक्षा - २००० दिल्ली में, व्यवसाय - स्टील कम्पनी में नौकरी (Marketing Manager), अहमदाबाद (गुज.) निवासी युवक हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वधू चाहिए। फोन : 9099188176
(सम्पर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-4230)

तेली जाति, नागस्य गोत्र, रंग गोरा, ३१/५'-४'', शिक्षा - इलेक्ट्रीकल इंजीनियरिंग, दीक्षा - २००२ अहमदाबाद में, व्यवसाय - मैनेजर रिलायंस इंडस्ट्रीज में, अनगुल (ओड़िशा) निवासी युवक हेतु पूज्यश्री से दीक्षित, सुयोग्य वधू चाहिए।
फोन : 8511624387
(सम्पर्क : लो. क. से. बॉक्स क्र. M-4219)

स्वास्थ्य संबंधी सरल प्रयोग

स्वास्थ्य-उपयोगी लोकोक्तियाँ भारतीय जनमानस में प्रचलित हैं, इनका अनुसरण कर हमारे पूर्वज निरोग रहा करते थे। आप भी निर्देशित नियमों का पालन कर निरोग रहें :

चैत्र गुड़, बैसाखे तेल, जेठ पंथ, असाढ़ बेल।
सावन साग न भादौं दही,
क्वार करैली, कातिक मही ॥
अगहन जीरा, पूसे धना,
माघे मिश्री, फागुन चना।
जो यह बारह देय बचाय,
तो घर वैद्य कभी न जाय ॥

'चैत्र महीने में गुड़, वैशाख में तेल, ज्येष्ठ की दोपहर में यात्रा करना, आषाढ़ में बेलफल, श्रावण में साग, भाद्रपद में दही, आश्विन में करेला, कार्तिक में छाछ, मार्गशीर्ष में जीरा, पौष में धनिया, माघ में मिश्री और फाल्गुन में चने का सेवन करना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक माना गया है। जो इन १२ से बचकर रहता है, उसे वैद्य या डॉक्टर के पास जाने की नौबत नहीं आती।'

चैत्र मास में नीम बेसहनी,
बैसाख में खाय जड़हनी।
सावन हर्रे भादौं चीत,
क्वार मास गुड़ खा लो मीत ॥
कातिक मूली अगहन तेल,
पूस में करे दूध से मेल।
माघ मास घिउ खिचड़ी खाय,
फागुन उठि के प्रात नहाय ॥
जो यह नियम करै बनाय,
तो घर वैद्य कभी न जाय।

'चैत्र महीने में नीम, वैशाख में चावल, श्रावण में हरड़, भाद्रपद में चिरायता, आश्विन में गुड़, कार्तिक में मूली, मार्गशीर्ष में तेल, पौष में दूध, माघ में घी-खिचड़ी खाने तथा फाल्गुन में प्रातःकाल में स्नान करने से व्यक्ति सदा निरोगी व स्वस्थ रहता है।'

स्वस्थ रहने के सरल सूत्र

* प्रतिदिन योगासन करें, सम्भव न हो तो खुले हवादार स्थान में टहलें। सुबह की ताजी व शुद्ध वायु से शरीर में स्फूर्ति आती है तथा जीवनीशक्ति का विकास होता है।

* रोज सुबह खाली पेट नीम की १५-२० पत्तियाँ खाने से उनमें विद्यमान जीवाणुनाशक 'इजेडिरेक्टिन' रसायन यकृत (लीवर) को स्वस्थ व मजबूत बनाता है। यह प्रयोग मोटापा घटाकर शरीर को सुडौल बनाता है।

* रात को सोने से एक-डेढ़ घंटा पहले एक गिलास दूध में एक चम्मच देशी गाय का घी और एक चम्मच शुद्ध शहद मिलाकर रोज पीने से शरीर निरोगी रहता है। (भोजन के २ घंटे बाद ही दूध पियें।)

* भोजन में तेल, नमक व गर्म मसालों की मात्रा अधिक नहीं होनी चाहिए। ये कई रोगों की जड़ हैं।

* आँवला, नींबू, अदरक, हरड़ का उपयोग किसी-न-किसी रूप में प्रतिदिन करना चाहिए। (रविवार और शुक्रवार को आँवला नहीं खाना चाहिए।)

* सौंफ को चबाकर खाने से या उसका रस चूसने से अथवा ४-५ ग्राम सौंफ का चूर्ण गर्म पानी के साथ लेने से अफरा में लाभ होता है।

* गुनगुना पानी ३-३ घंटे के अंतराल पर पीने से अपच में राहत मिलती है।

नियम का महत्त्व

- पूज्य बापूजी

जीवन में कोई–न–कोई व्रत, नियम अवश्य होना चाहिए। छोटा–सा नियम भी जीवन में बड़ी मदद करता है।

एक सेठ किसी महात्मा की कथा में गया। महात्मा ने उससे कहा : ''जीवन में कोई–न–कोई नियम ले लो।''

उस पेटू सेठ ने कहा : ''बाबाजी ! और तो कोई नियम नहीं लेकिन जब तक मेरे घर के सामने रहनेवाला बूढ़ा कुम्हार जिंदा होगा, तब तक उसको देखकर ही दोपहर का भोजन करूँगा।''

बाबा : ''चलो... ठीक है। इतना ही व्रत रख लो भाई !''

यह व्रत तो आसान था। बूढ़ा कुम्हार घर के सामने ही रहता था। इस व्रत को पालने में कोई श्रम भी नहीं था। दूर से देख ले तब भी काम बन जाता था।

एक दिन बूढ़े का लड़का ससुराल चला गया। बूढ़ा गधे लेकर मिट्टी लाने गया। सेठ घर पर भोजन करने आया तो वह बूढ़ा नहीं दिखा। कुम्हार की पत्नी से सेठ ने पूछा : ''कहाँ गया बूढ़ा ?''

पत्नी : ''गधे लेकर मिट्टी लाने गये हैं।''

''कब आयेगा ?''

''अभी ही गये हैं, थोड़ी देर लगेगी।''

''कहाँ गया है ?''

बुढ़िया ने जगह बता दी। सेठ गया उस जगह की ओर तो दूर से ही देखा कि वह बूढ़ा मिट्टी भर रहा है। यह देखकर सेठ वापस लौटने लगा। उसका तो केवल दूर से देखने का ही व्रत था। उसे लौटते हुए देखकर बूढ़े ने आवाज लगायी : ''ऐ भाई ! इधर आ।''

बात यह थी कि बूढ़े को मिट्टी खोदते–खोदते अशर्फियों का घड़ा मिला था और वह घड़े को व्यवस्थित ही कर रहा था कि उसी वक्त सेठ को लौटते हुए देखकर उसे लगा कि 'यह घड़ा देखकर जा रहा है पुलिस को बताने। सरकार में चला जाय इससे अच्छा तो आधा इसका आधा मेरा...' यह सोचकर उसने सेठ को आवाज लगायी थी।

कहानी कहती है कि सेठ ने एक बूढ़े कुम्हार को देखकर दोपहर के भोजन का जरा–सा व्रत लिया तो अशर्फियों का आधा घड़ा उसे मिल गया। अगर बाबाजी के कहे अनुसार वह कोई व्रत लेता तो बाबाजी के पूरे अनुभव का घड़ा भी उसके हृदय में छलकने लग जाता।

सजातीय विचारवालों में मेल-मिलाप से होती है विजय

– पूज्य बापूजी

एक बात खास ध्यान में ले लेने जैसी है। एक ही गुरु के शिष्य परस्पर संघर्ष करते हैं तो गुरु की शक्ति ही खत्म कर रहे हैं। सजातीय विचारवाले आपस में टकराते हैं तो किसीको भी लाभ के बजाय हानि ही ज्यादा होती है। सजातीय संस्कारवालों में आपस में मेल-मिलाप होगा तो आसुरी शक्तियों और विजातीय संस्कारों पर जीनेवाले व्यक्तियों के प्रभाव से बच सकते हैं। सजातीय के साथ संघर्ष से अपनी शक्ति को बचाकर विजातीय पर विजय पाने के लिए लगानी चाहिए।

प्रशांत अंतवाल (नोयडा) जैसे कुछ नासमझ लोग आश्रमवासियों पर झूठे ठीकरे फोड़कर साधकों को गुमराह करने का भयंकर पाप कर रहे हैं और अपनी दुर्मति का परिचय दे रहे हैं। साधकों को लड़ाने-भिड़ाने का पाप करनेवालों से सावधान रहें !

सर्व फलदायक

(जन्माष्टमी व्रत : १७ अगस्त)

जन्माष्टमी व्रत-उपवास

जन्माष्टमी व्रत अति पुण्यदायी है। 'स्कंद पुराण' में आता है कि 'जो लोग जन्माष्टमी व्रत करते हैं या करवाते हैं, उनके समीप सदा लक्ष्मी स्थिर रहती है। व्रत करनेवाले के सारे कार्य सिद्ध होते हैं। जो इसकी महिमा जानकर भी जन्माष्टमी व्रत नहीं करते, वे मनुष्य जंगल में सर्प और व्याघ्र होते हैं।'

बीमार, बालक, अति कमजोर तथा बूढ़े लोग अनुकूलता के अनुसार थोड़ा फल आदि ले सकते हैं।

अमृतबिंदु

- पूज्य बापूजी

* जो सद्गुरुओं की सीख को श्रद्धापूर्वक हृदय में धारण करते हैं और संकेत का तत्परतापूर्वक पालन करते हैं, उनके शोक, मोह, चिंता, भय सब ऐसे भाग जाते हैं जैसे सूर्य उदय होने से रात्रि के निशाचर।
* जैसे गंगा का जल सबके लिए है, वायु सबके लिए है, सूर्य का प्रकाश सबके लिए समान है, ऐसे ही संत भी सबके लिए समान ही होते हैं। जिसकी जितनी सच्ची सेवा, श्रद्धा, प्रीति होती है, वह उतना ही अधिक लाभ ले लेता है।
* हम जितना महत्त्व संसार को देते हैं, उतना महत्त्व अगर ईश्वर को दें तो सचमुच फिर देर नहीं है, आप ईश्वर हैं ही।
* जो निःस्वार्थ भक्त होता है वह अडिग रहता है, कभी फरियाद नहीं करता और दुर्बुद्धि निंदकों के चक्कर में नहीं आता।
* यदि मनुष्य विवेक-बुद्धि करके सदैव सतर्क एवं सावधान रहे तो उसे कोई भी विपरीत परिस्थिति हिला नहीं सकती।

खेल-खेल में बढ़ायें बच्चों की एकाग्रता

आप जब अपना हाथ ऊपर की ओर करेंगे, तब बच्चों को ताली बजाते हुए 'ॐ...ॐ...ॐ...' बोलना है और जब आप हाथ नीचे की ओर करेंगे, तब ताली बजाना बंद करना है। जो बच्चे गलत क्रिया करेंगे वे खेल से बाहर होते जायेंगे, अंत में जो बचेगा वह विजेता होगा। विजेता को पुरस्कार दें। इस प्रकार मनोरंजन के साथ-साथ बच्चों की एकाग्रता भी विकसित होगी।

संकीर्तन यात्राओं व प्रभातफेरियों द्वारा सत्य का प्रकाश फैलाते बापूजी के प्यारे

दिल्ली

जगन्नाथपुरी

इंदौर

भोपाल

कृष्णानगर-रायपुर (छ.ग.)

अलीगढ़ (उ.प्र.)

अमरावती (महा.)

अम्बाला (हरि.)

पटना

राजस्थान में जागृति लहर : राष्ट्र जागृति संकीर्तन यात्राएँ

देवली, जि. टोंक

समरानियाँ, जि. बाराँ

चित्तौड़गढ़

इटावा, जि. कोटा

बाराँ

सीसवाली, जि. बाराँ

झालावाड़

अन्ता, जि. बाराँ

छीपा बड़ौद, जि. बाराँ

सांगोद, जि. कोटा

रामगंजमंडी, जि. कोटा

बाँसवाड़ा

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org देखें।

RNI No. 66693/97
RNP No.GAMC-1253-A/2012-14
Issued by SSP-AHD
Valid upto 31-12-2014
LWPP No. CPMG/GJ/45/2014
(Issued by CPMG GUJ. valid upto 31-12-2014)
Permitted to Post at AHD-PSO
from 18th to 25th of E.M.
Publishing on 15th of every month

कलियुग का कल्पवृक्ष

चारों युगों में से कलियुग में भगवन्नाम की महिमा विशेष है । श्रीमद् भागवत में आता है :

कृते यद् ध्यायतो विष्णुं त्रेतायां यजतो मखैः ।
द्वापरे परिचर्यायां कलौ तद्धरिकीर्तनात् ।।

'सतयुग में भगवान विष्णु के ध्यान से, त्रेता में यज्ञ से और द्वापर में भगवान की पूजा से जो फल मिलता था, वह सब कलियुग में भगवान के नाम-कीर्तनमात्र से प्राप्त हो जाता है ।'

अतः भगवन्नाम संकीर्तन को कलियुग का 'कल्पवृक्ष' भी कहा गया है ।

नाम जपत मंगल दिसि दसहूँ ।

भगवान के नाम से दसों दिशाओं में मंगल-ही-मंगल होता है ।

'हरि ॐ' नाम के उच्चारण एवं कीर्तन से मूलाधार केन्द्र में स्पंदन होते हैं । फलस्वरूप भय, ईर्ष्या, अहंकार, स्पर्धा, वैर, क्रोध आदि दुर्गुण, विकार मिट जाते हैं । सामूहिक संकीर्तन से तुमुल ध्वनि पैदा होती है जो पापों का नाश करती है, वैचारिक प्रदूषण को दूर करती है ।

आज पूज्य बापूजी के करोड़ों साधक विश्व-मांगल्य का संकल्प लेकर देशभर में संकीर्तन यात्राएँ व प्रभातफेरियाँ निकाल रहे हैं । समाज में व्याप्त असत्य, निंदा, दुर्गुण-दोषों की काली घटाओं को सत्य के उज्ज्वल प्रकाश से मिटाने का प्रयास कर रहे हैं । भारतीय संस्कृति एवं उसके रक्षक संतों के विरुद्ध हो रहे षड्यंत्रों से भी लोगों को आगाह कर रहे हैं । (पढ़ें पृष्ठ ६)

कलियुग के दुष्प्रभाव से पार करनेवाली

संकीर्तन क्रांति